फागुन की ग्यारस | by Shyam Salona (Kota)

फागुन की ग्यारस जब आ जाती है तो
सांवरे की याद सताती है
खाटू की गाडी जब छूट जाती है तो
बेचैनी बढ़ जाती है

फागुन में बाबा का लगता है मेला
श्याम प्रेमियों का आता है रेला
होती है मेहरबानियां, भर्ती हैं सबकी झोलियाँ
फागण की ग्यारस जब आ जाती है तो
सांवरे की याद सताती है

खाटू की गलियों में उड़ती गुलाल है
सांवरे के सेवक करते धमाल हैं
लगती हैं लाखों अर्ज़ियाँ होती हैं सुनवाइयां
खाटू की गाडी जब छूट जाती है तो
बेचैनी बढ़ जाती है

लम्बी कतारों में दिखते निशान हैं
पूरे यहाँ पर होते सबके अरमान हैं
जय कौशिक जो भी लिख रहा
लिखवाता बाबा श्याम है
फागण की ग्यारस .....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ab%e0%a4%be%e0%a4%97%e0%a5%81%e0%a4%a8-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%97%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%be%e0%a4%b0%e0%a4%b8-by-shyam-salona-kota/